वेद धर्म ही धर्म है

''नावेदविन्मनुते तं बृहन्तम्।'' (तै. ३/१२/९/७)
(अर्थात् जो वेद को नहीं जानता है वह
उस महान परमात्मा को भी नहीं ज़ानता है।)

मैनें पिछले पचास वर्षों से इस बात पर विचार किया है कि धर्म क्या है, कहाँ है, कैसा है, उसे किसने सृजा है, कब वह उत्पन्न हुआ और उसकी समानता क्या किसी अन्य धर्म (या धार्मिक-विचार) से सम्भव हो सकती है या नहीं ? और आज मैं अपने चिंतन के जिस कगार पर खड़ा हूँ, कदाचित वह मेरे चिंतन का अंतिम कगार है जिस की स्थिति इस प्रकार है -

''इस पथ का उद्देष्य नहीं है, शांत-भवन में टिक रहना।
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं ।।''
- महाकवि श्री जयशंकर प्रसाद

और मेरी चिंतन-प्रक्रिया का निष्कर्ष यह है कि यदि इस संसार में धर्म नहीं है तो वह भारत के उन चार महाग्रंथों में संगृहीत है जिन्हें लोग ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद कहते हैं। धर्म इन्हीं चार महाग्रंथों का सार है जो सृष्टि के आरम्भ में (इस वर्तमान सृष्टि से भी पूर्व की किसी सृष्टि) में था, उसे परम-पिता परमेश्वर ने स्वयँ सृजा था और उस परम-पिता परमेश्वर की तरह उसके सृजन का कभी भी नाश नहीं होता है। लोग इसीलिये उसे अपौरूषेय कहते हैं।

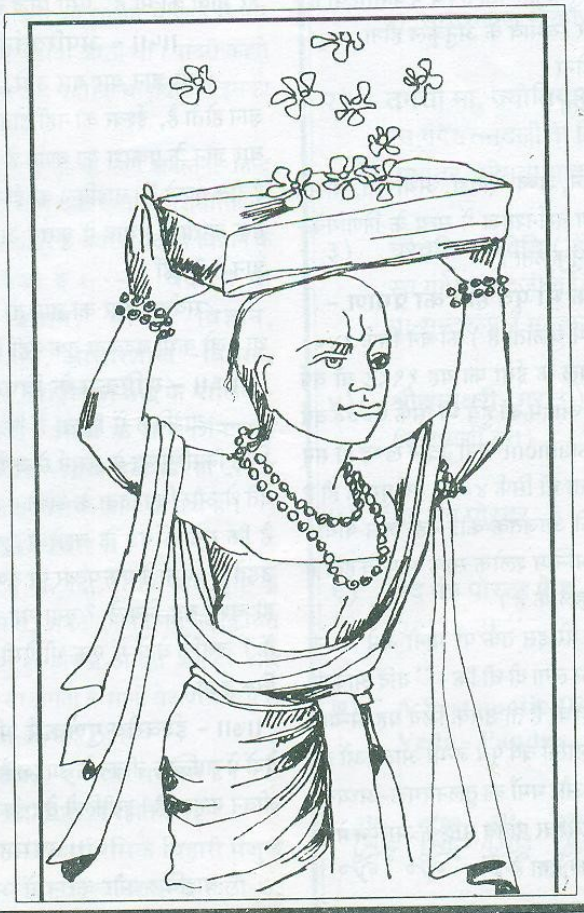

वेद धर्म के मूल हैं - यही मेरी चिंतन - प्रक्रिया का निर्णय है और यह कोरा भावावेग नहीं है, यह एक वैज्ञानिक-सत्य है जिसके आधार हैं। मेरे निर्णय के सात सर्वमान्य आधार हैं जो इस प्रकार हैं -

१. ईश्वरीय-ज्ञान के प्रमाण
२. सृष्टि-पूर्व के भी पूर्व होने का प्रमाण
३. किसी भी देश, काल, इतिहास और भूगोल से परे का प्रमाण,
४. ईश्वरीय भाषा का प्रमाण,
५. अपरिवर्तनीयता का प्रमाण,
६. सृष्टिक्रम के विपरीत न होने का प्रमाण; और
७. ईश्वरीय गुण-कर्म और स्वभावों का प्रमाण का होना।

जो लोग वेदधर्म (अर्थात् आर्यधर्म यानी हिन्दू धर्म) को अन्य धर्मों के समान बताते हैं, वे मूर्ख हैं। वेदधर्म में जो सात बातें मैंने देखी हैं वे संसार के किसी भी धर्म में नहीं हैं इसी लिये वेदधर्म के अतिरिक्त संसार में कोई भी धर्म, धर्म कहलाने योग्य नहीं है। मेरे इस विचार का समर्थन प्रकारान्तर से संसार का हर विद्वान करता है। कुछ उदाहरण देकर मैं अपने इस कथन की पुष्टि करता हूँ। सबसे पहले आप प्रौफेसर मैक्समूलर के ये वाक्य देखिये -

(१) विद्यमान-ग्रंथों में वेद सबसे पुराना है। वेद होमर की कविताओं से भी पुराना है।

(२) मेरा निश्चित मत है कि वेद शताब्दियों तक विद्वानों के अध्ययन का विषय बना रहेगा और मनुष्य जाति के पुस्तकालयों में सबसे अधिक पुरानी पुस्तक समझा जाता रहेगा।

(३) आर्य-जगत (भारत, ईरान, योरोपादि) का सबसे पुराना-ग्रंथ ऋग्वेद है। ब्राह्मणों की ये पवित्र ऋचायें सारे संसार के साहित्य में अद्वितीय हैं और इनकी जिस प्रकार रक्षा होती है, उसे तो चमत्कारपूर्ण ही कहा जायेगा।

मौरिस फिलिप भी लिखते हैं - ''बाइबिल के पुरातन खण्ड (Old Testment) की पुस्तकों के इतिहास और काल-गणना में किये गये नवीनतम अनुसंधानों के पश्चात अब हम निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि ऋग्वेद न केवल आर्यों का, प्रत्युत सारे संसार का

सबसे पुराना धर्मग्रंथ है।''

तिलक भी कहते थे कि ऋग्वेद को ''आर्य (भारत, ईरान, योरोपदि) के लोगों का सबसे पुराना ग्रंथ है।''

लुई जैकालियट कहते हैं - ''वेद के शब्द आदि अनन्त सत्यज्ञान से युक्त हैं। वेद तत्वोपदेश का भी तत्वोपदेश है जो कि हमारे पुरखाओं पर परमात्मा ने प्रकट किया था। वेद सृष्टि के आदि-काल का विशुद्ध सिद्धांत ज्ञान है परमोत्तम शिक्षा है।''

एक बार मोलिये लियो डेलबो ने पेरिस के अर्न्तराष्ट्रीय साहित्यिक-संघ में अपना एक निबंध पढते हुये ऋग्वेद के बारे में कहा था कि: ''ग्रीस और रोम का कोई भी पुराना स्मारक (Mohument) ऋग्वेद से अधिक बहुमूल्य नहीं है।''

यदि मैं इसीप्रकार विद्वानों के प्रवचन लिखता रहा तो एक ग्रंथ ही बन जायेगा, इसलिये अब मैं यह स्पष्ट करता हूँ कि वेदधर्म ही क्यों धर्म है और संसार के अन्यधर्म धर्म नहीं अधर्म हैं।

।।१।। - ईश्वरीय-ज्ञान के प्रमाण -

वेद ईश्वरीय -ज्ञान की इन पाँचो कसौटियों पर खरे उतरते हैं इसीलिये वेद ईश्वरकृत हैं, मनुष्यकृत नहीं है। ये ५ कसौटियाँ हैं -

(१) ईश्वर के गुण-कर्म और स्वभाव के अनुकूल होना

(२) सृष्टिक्रम के अनुकूल होना

(३) आप्तपुरुषों की अनुकूलता।

(४) आत्मा की पवित्रता।

(५) प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव- ये आठ प्रमाण दर्शनशास्त्र में सत्य के निर्णायक-तत्व कहे गये हैं - इन की अनुकूलता।

।।२।। - सृष्टि के पूर्व के भी पूर्व होने का प्रमाण -

कुरान (जो इस्लामधर्म चलाता है) को बने सिर्फ १४०० सौ साल हुये हैं, और बाइबिल के ईसा का यह १९९८ वाँ वर्ष चल रहा है और इनके हजरत आदम को हुये भी सिर्फ ६००० वर्ष ही हुये हैं - इसका New Testament यानी नवीन खण्ड तो सन् १९८६ का ही है। जेन्दवा वस्ता भी सिर्फ ४००० वर्ष पुराना ही है जबकि वेदों के रचनाकाल को आजतक कोई नहीं जान पाया। ऋग्वेद की पुरूष-सूक्ति का अन्तिम श्लोक साफ साफ कहता है कि वेद वर्तमान सृष्टि से भी पहले के हैं।

प्रौफेसर मैक्समूलर ने मेरे इस तर्क पर मानो जैसे अपनी मुहर मुदत्त- पहले ही यह कहकर लगा दी थी कि - '' यदि आकाश और धरती का रचयिता कोई ईश्वर है तो उसके लिये यह अन्याय की बात होगी कि वह मूसा से लाखों वर्ष पूर्व जन्मी आत्माओं को अपनी ज्ञान से वंचित रखे। तर्क और धर्मो का तुलनात्मक-अध्ययन दोनो बलपूर्वक कहते हैं कि परमेश्वर मानव सृष्टि के आरम्भ में ही अपना ईश्वरीय-ज्ञान मनुष्यों को देता है।''

।।३।। - किसी भी देश काल इतिहास और भूगोल से परे का प्रमाण -

बाइबिल में पैलस्टाइन के यहूदियों का इतिहास है और कुरान में अरब का वर्णन है तथा मुहम्मदसाहब के जीवन के किस्से भी हैं जबकि ईश्वर की किताब में समस्त भूमण्डल का वर्णन होता है जैसा कि वेदों में है न देश का, न काल का, न इतिहास का और न भूगोल का।

।।४।।- ईश्वरीय भाषा का प्रमाण -

कुरान अरबी में है, बाइबिल इबरानी (हिब्रू) में है और जेन्दअवस्ता पहलवी भाषा में है जबकि वेद ब्राह्मी-भाषा और ब्राह्मीलिपि में हैं जो कीलाक्षरयुक्त है यानी परमात्मा की भाषा और लिपि है। ब्रह्मा ने अपने सत्रहवें मानसपुत्र(चित्रगुप्त) से वेद लिखवाये थे जो कलम, दवात, स्याही और पट्टिकायें अपने चारो हाथों में लेकर अवतरित हुये थे। यह चित्रगुप्त विष्णु के वाँङ्मयावतार थे।

वेद की भाषा से ही संस्कृत भाषा निकली है जो संसार की हर भाषा की मां है , ऐसा सिद्ध हो चुका है।

।।५।। - अपरिवर्तनीयता का प्रमाण -

जो ज्ञान बार बार उतरे, अपनी वृद्धि करे वह मनुष्य का ज्ञान होता है, ईश्वर का नहीं होता है। बाइबिल और कुरान में बार बार ज्ञान के प्रकाश का वर्णन है जिन्हें क्रमशः जबूर, तौरेत और इंजील कहते हैं। बाइबिल का ईश्वर तो अपनी भूलों पर पश्चाताप तक करता है। बाद में कुरान आया। क्या यह सर्वज्ञ-ईश्वर का ज्ञान है ? नहीं।

सर्वज्ञ-ईश्वर का ज्ञान तो वेदों में है, जो एकबार ही उतरा था। जो कभी बदलता तक नहीं है।

।।६।। - सृष्टिक्रम के विपरीत न होने का प्रमाण -

बाइबिल में लिखा है कि ईसा कुमारी कन्या के गर्भ से, बिना किसी पुरूष के संसर्ग से जन्मे थे। वे मुर्दों को भी जीवित कर देते थे और बिना दवा के अंधों को आँखे दे देते थे। कुरान कहता है कि सूर्य कींचड़ के चश्मे में डूबता था पहाड बादल की तरह उड़ते थे। मूसा ने एक पत्थर पर डण्डा क्या मारा और उस पत्थर से ही चश्में बह निकले ? क्या यह बातें सृष्टिक्रम (वैज्ञानिक) की हैं ? जबकि वेदों में एक भी ऐसी बात नहीं है जो सृष्टि क्रम के विरूद्ध हो।

।।७।। - ईश्वरीय गुणकर्म और स्वभाव का प्रमाण -

वेदों में सात्विक जीवन के उपदेश हैं जैसे जीवन को स्वयँ परमात्मा जीवन कहता है। इसीलिये वेद ईश्वरीय-ज्ञान के प्रमाण हैं।

।। उपसंहार ।।

बाइबिल और कुरान में आपने भी पढा होगा कि भूमि

चौड़ी है , फरिश्ते आसमान पर रहते हैं, स्वर्ग में दूध और शहद की नदियाँ बहती हैं । ईसाई-पादरी वैज्ञानिकों पर अत्याचार करते हैं और इस्लामी पुरूष स्त्रियों पर स्त्रियों से निकाह करके अपनी हवस पूरी करते रहते हैं । कहावत तक प्रसिद्ध है -

'' शेख ! हसीनों की और थूकते भी नहीं ।
मौका लगे तो चूकते भी नहीं ।।''

क्या यह धर्म, धर्म है ? मुहम्मद साहब अपने पुत्र जैद की पत्नी को तलाक दिलाकर, बिना ४० दिन की प्रतीक्षा किये, निकाह कर लेते हैं । मुहम्मद साहब का तो खतना तक नहीं हुआ था । क्या वे सच्चे मुसलमान थे जिन्होने तलवार की नौंक पर मक्का व मदीना जीता था ?

ईसाई -धर्म के पादरी कितने अत्याचारी थे, यह बात इसी घटना से सिद्ध हो जाती है कि उन्होंने प्रसिद्ध खगोलशास्त्री जर्दानो-ब्रूनो को जिन्दा हजारों की भीड़ में जला दिया था, गैलीलियो को जेल में डाल दिया था क्योंकि वह यह कहता था कि पृथ्वी सूर्य के चारो ओर घूमती है । देवी हियोकिया, पादरी सिरिल की आज्ञा से , इसलिये नग्न कर दी गयी थी और भरे बाजार में जान से मार डाली गयी थी कि वह रेखागणितं पढ़ाया करती थी । पादरी कहते थे कि रेखागणित की विद्या असत्य है क्योंकि बाइबिल में इसका उल्लेख ही नहीं है ।

इस प्रकार की उल झलूल बातों के लियें सनातनी-हिन्दू भी कम जिम्मेदार नहीं हैं जो पुराणों में ऐसी ऐसी अतिशयोक्तिपूर्ण बातें लिखे गये हैं जो सत्य से कोसों दूर हैं जबकि वेदों में विज्ञान के विरूद्ध एक भी बात नहीं लिखी है ।----- **वेदों में तो औषधिविज्ञान, शरीर विज्ञान, भोजन विज्ञान, राजनीतिविज्ञान, समाजविज्ञान, आचारशास्त्र -विज्ञान, आध्यात्मशास्त्र, भौतिकशास्त्र, सृष्टिविज्ञानादि के मौलिक-तत्वों का विवेचन विद्यमान है । आर्यों के सारे दर्शनशास्त्र और आयुर्वेदादि सभी वैज्ञानिक -शास्त्र वेदों को ही अपना आधार मानते हैं इसलिये वेद ईश्वरीय-ज्ञान के ग्रंथ हैं ।**

।। मेरे अपने विचार ।।

कभी कभी मैं सोचता हूँ कि वेद, जो कि सारी सृष्टि के प्राणियों के लिये पिता के समान हैं, अपने उन नये नये तथाकथित -मनुष्य -निर्मित-धर्मों के ग्रंथों से अपनी अवज्ञा अनादर और अनास्था के शब्द सुनते हैं तो ऐसा लगता है मानो वेद परोक्षरूप से अकबर इलाहाबादी के शब्दों में यह कह रहे हैं -

'' हम ऐसी सब किताबें काबिल-ए-जप्ती समझते हैं ।
जिन्हें पढ़ पढ़ के बच्चे बाप को खप्ती समझते हैं ।।''

- आचार्य रसिक बिहारी मंजुल
दिल्ली, विश्वविद्यालय, दिल्ली-७.